मैं संत अन्ना की बेटी हूँ

मैं हूँ संत अन्ना की बेटी
मरियम की हूँ मैं बहन
येसु की हूँ मैं मौसी
यही है मेरा पारिवारिक रिश्ता ।

मरियम बन गयी येसु की माँ
मैं बन गयी येसु की छोटी माँ
सस्नेह करती हूँ उन्हें गोदी
साथ चलती व चलने सिखाती ।

यही है मेरो जिन्दगी व पेशा
उन लोगों की सेवा करना
उनके घावों में पट्टी डालना
जिनके दिल में बसते हैं येसु आज ।

जैसे बढ़ते गये येसु ईश्वरीय अनुग्रह में
बुद्धि और बल में सबके साथ,
वैसे स्नेह व दुलार से बढ़ाना
धर्म है मेरा हर बच्चे को आज ।

मैं अब बन गयी हूँ येसु की दासी
जैसे मरियम भी बन गयी थी ईश की,
क्योंकि येसु और ईश्वर एक हैं
शान्तिदाता व मुक्तिदाता हमारा ।

दिल ही दिल को समझता है
प्यार ही है वह भाषा दिल को
जो है ईश्वर और येसु की भी
उन्होंने ही मुझे बना लिया है अपना ।

मैं कमजोर हूँ, नासमझ हूँ मैं
गिर सकती हूँ व बोलना नहीं आता
फिर भी जीती हूँ केवल उनके लिए
और जिनमें बसते हैं वे जन्म से ।

हे प्रभु, दुनियावी मोह से भंग कर दे मुझे
शैतानी चाल को परखने हेतु विवेक दे
मेरी अपवित्रता को धो डाल अपने लहू से
कि युग-युग बनी रहूँ मैं तेरी सदा ।

फा॰ लीनुस कुजूर, ये॰ सं॰ ।
(संत अन्ना का पर्व, 2018)